# पंचम अध्याय

# शोधसार, निष्कर्ष एवं सुझाव

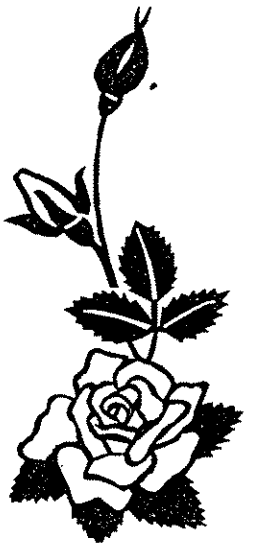

# पंचम अध्याय

## शोधसार, निष्कर्ष एवं सुझाव

### 5.0 प्रस्तावना :–

आदिवासी भारत के मूल निवासी है। ये प्रारंभ से ही दूरस्थ एवं निर्जन स्थानों पर निवास करते रहे हैं। परिणाम स्वरूप आदिवासियों पर शहरी सभ्यता एवं विकास का बहुत कम प्रभाव पड़ा है, इसी कारण ये सदैव ही प्रगति के नवीन साधनों से ग्रस्त रहे हैं। इसलिये आदिवासियों की अपनी अलग व विशिष्ट पहचान बनी रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात आदिवासियों को देश की मुख्य धारा से जोड़ने के लगातार प्रयास किये जा रहे हैं। आदिवासियों को अन्य लोगों की बराबरी में लाने के लिये आदिवासी क्षेत्रों में शालायें खोली गई। आदिवासियों में पिछड़ेपन का मुख्य कारण उनकी शिक्षा है। आदिवासियों की शिक्षा के लिये प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शालायें तथा पूर्व माध्यमिक छात्रावास, मैट्रिकोत्तर छात्रावास तथा आश्रम शालायें खोली गई। इसके अलावा आदिवासी विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देने की भी व्यवस्था शासन स्तर से की गई। इन सभी सुविधाओं के बाद भी आज आदिवासी परिवार ज्यादातर अशिक्षित हैं।

### 5.1 प्रस्तुत अध्ययन :–

शोधकर्ता द्वारा गुजरात राज्य के दाहोद जिले के फतेपुरा ब्लाक के प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा सातवीं के अनु. जन जाति के बच्चों का चयन किया गया था। इसमें शोधकर्ता ने बच्चों के पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर कैसा प्रभाव पड़ता है उसका अध्ययन करने का प्रयास किया गया है और साथ साथ शैक्षिक उपस्थिति का शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है उसका अध्ययन भी किया गया है।

### 5.2 समस्या कथन :–

"अनु. जन जाति के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन"

### 5.3. संक्षेपिका :–

संपूर्ण शोध प्रबंध को पांच अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में शोध परिचय, द्वितीय अध्याय में संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन, तृतीय अध्याय में शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया, चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या एवं पंचम अध्याय में शोध सार, निष्कर्ष एवं सुझाव तथा अंत में संदर्भ ग्रंथ एवं परिशिष्ट में उपयोग किये गये उपकरण को लिया गया है।

5.3.1 प्रथम अध्याय में अनु. जन जाति की भूमिका अनु. जन जाति का अर्थ एवं परिभाषा, प्रमुख विशेषताएं, सामाजिक जीवन, संवैधानिक प्रावधान, कोठारी कमीशन (1964–66) में आदिवासी शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में आदिवासी शिक्षा की जानकारी दी गई है।

## शोध के उद्देश्य

1. अनु. जन जाति के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक नियंत्रण के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. अनु. जन जाति के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक संरक्षण के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. अनु. जन जाति के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक दंड के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. अनु. जन जाति के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक अनुपालन के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. अनु. जन जाति के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक विलगन के प्रभाव का अध्ययन करना।
6. अनु. जन जाति के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक पुरस्कार के प्रभाव का अध्ययन करना।
7. अनु जन जाति के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक विशेषाधिकार से वंचितता के प्रभाव का अध्ययन करना।
8. अनु. जन जाति के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक पालन पोषण के प्रभाव का अध्ययन करना।
9. अनु. जन जाति के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक नामंजूरी के प्रभाव का अध्ययन करना।
10. अनु. जन जाति के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक अनुमत के प्रभाव का अध्ययन करना।
11. अनु. जन जाति के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर उपस्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना।

## शोध की परिकल्पनाएं

1. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक नियंत्रण के प्रभाव का सार्थक अन्तर नही है।
2. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक संरक्षण के प्रभाव का

सार्थक अन्तर नहीं है।

3. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक दंड के प्रभाव का सार्थक अन्तर नहीं है।
4. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक अनुपालन के प्रभाव का सार्थक अन्तर नहीं है।
5. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक विलगन के प्रभाव का सार्थक अन्तर नहीं है।
6. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक पुरस्कार के प्रभाव का सार्थक अन्तर नहीं है।
7. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक विशेषाधिकार से वंचितता के प्रभाव का सार्थक अन्तर नहीं है।
8. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक पालन पोषण के प्रभाव का सार्थक अन्तर नहीं है।
9. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक नामंजूरी के प्रभाव का सार्थक अन्तर नहीं है।
10. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक उन्मुक्तता के प्रभाव का सार्थक अन्तर नहीं है।
11. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उपस्थिति के प्रभाव का सार्थक अन्तर नहीं है।

**चर**

1. **स्वतंत्र चर**
   1. पारिवारिक वातावरण
   2. शैक्षिक उपस्थिति
2. **आश्रित चर**
   1. शैक्षिक उपलब्धि

5.3.2 द्वतीय अध्याय में अनु. जन जाति के पारिवारिक वातावरण से संबंधित पूर्व में देश विदेश में किये गये अध्ययनों की जानकारी दी गई है।

5.3.3 तृतीय अध्याय में शोध के लिये न्यादर्श शोध उपकरण प्रदत्तों का संकलन प्रयुक्त सांख्यिकी विधियों आदि की जानकारी दी गई है।

## न्यादर्श :-

प्रस्तुत अध्ययन में गुजरात राज्य के दाहोद जिला के फतेपुरा ब्लाक के प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा सातवीं में अध्ययनरत् अनु. जन जाति के 279 बच्चों का चयन यादच्छिक विधि से किया गया है। जिसमें 169 छात्र तथा 110 छात्राओं को शामिल किया गया।

## उपकरण :-

संबंधित अध्ययन के लिए डॉ. करूणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित पारिवारिक वातावरण परिसूची का उपयोग किया गया।

## प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकी :

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु 'मध्यमान' 'मानक विचलन' 'टी' अनुपात व प्रसरण विश्लेषण का उपयोग किया गया।

5.3.4 चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या की गई है। चतुर्थ अध्याय में शोध उद्देश्य के आधार पर शून्य परिकल्पनाओं की सार्थकता का अध्ययन किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण को तालिका क्रमांक 5.1 में दर्शाया गया है।

**तालिका क्रमांक 5.1 प्रदत्तों का विश्लेषण**

| परिकल्पना क्र. | तालिका क्र. | प्रयुक्त सांख्यिकी | प्राप्त परिणाम | प्राप्त निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|
| 1. | 4.2 | प्रसरण विश्लेषण | .713 | एन.एस. |
| 2. | 4.3 | प्रसरण विश्लेषण | .771 | एन.एस. |
| 3. | 4.4 | प्रसरण विश्लेषण | 1.898 | एन.एस. |
| 4. | 4.5 | प्रसरण विश्लेषण | 1.474 | एन.एस. |
| 5. | 4.6 | प्रसरण विश्लेषण | .445 | एन.एस. |
| 6. | 4.7 | प्रसरण विश्लेषण | 1.833 | एन.एस. |
| 7. | 4.8 | प्रसरण विश्लेषण | .506 | एन.एस. |
| 8. | 4.9 | प्रसरण विश्लेषण | .782 | एन.एस. |
| 9. | 4.10 | प्रसरण विश्लेषण | 1.764 | एन.एस. |
| 10. | 4.11 | प्रसरण विश्लेषण | .659 | एन.एस. |
| 11. | 4.12 | 'टी' अनुमान | .264 | एन.एस. |

## 5.4 निष्कर्ष एवं व्याख्या :-

प्रस्तुत शोध का सांख्यिकी का उपयोग करते हुये न्यादर्श के प्रदत्तों के संकलन एवं विश्लेषण करने के पश्चात् निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

1. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक नियंत्रण के प्रभाव का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक संरक्षण के प्रभाव का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक दंड के प्रभाव का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
4. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक अनुपालन के प्रभाव का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
5. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक सामाजिक विलगन के प्रभाव का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
6. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक पुरस्कार के प्रभाव का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडता है।
7. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक विशेषाधिकार से वंचितता के प्रभाव का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
8. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक पालन पोषण के प्रभाव का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
9. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक नामंजूरी के प्रभाव का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
10. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक उन्मुक्तता के प्रभाव का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
11. अनु. जन जाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उपस्थिति के प्रभाव का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

## 5.6 सुझाव :-

बच्चों के सामाजीकरण में परिवार का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है और इसमें माता–पिता की भूमिका सबसे अहम होती है। भारतीय परिवारों में माता–पिताओं में बच्चों के प्रति व्यवहार के बारे में नकारात्मक अभिवृत्ति रूढ़ हो गई है। जिसका असर माता–पिता के बच्चों के प्रति व्यवहार में दिखाई दे रहा है। माता–पिता बच्चों के प्रति कैसी अभिवृत्ति रखते हैं और किस प्रकार का व्यवहार करते हैं, उसका असर बच्चों के सामाजिक और मानसिक विकास पर होता है। क्योंकि बच्चों का 14–15 साल तक मानसिक, सामाजिक और भावाकिय विकास अधिक होता है। इसलिए

माता–पिता को बच्चों के प्रति प्रेमपूर्ण व्यवहार करना आवश्यक है।

1. अभिभावकों को बच्चों के प्रति नियंत्रण का ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए ताकि बच्चों की मानसिक और शारीरिक शक्ति कुंठित हो जाए।
2. माता–पिता के लिए बच्चों का भविष्य सुरक्षित है इसलिए बीमा के विषय में निर्णय लेना चाहिये।
3. माता–पिता को बच्चों के शैक्षिक भविष्य के लिए उनकी क्षमता बुद्धि और अभिरूचि को ध्यान में रखकर व्यवहार करना चाहिए।
4. माता–पिता को बच्चों के खाने पीने और कपड़ा पहनने के विषय में बच्चों की पसंदगी को महत्व देना चाहिए।
5. प्रतिदिन परिवार में बच्चों के साथ अधिक से अधिक समय बिताना चाहिये।
6. अपने बच्चों को विद्यालय में एक आम बच्चे के समान रहना सिखाना चाहिए।
7. बच्चों को जेब खर्च देने में अनुशासन और समानता रखना चाहिये। दिये गये पैसे का हिसाब मांगना चाहिए इससे बच्चे में बचपन से हिसाब रखने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जायेगी।
8. बच्चों को अच्छे कामों के लिए पुरस्कार देना चाहिये।
9. बच्चों के स्वतंत्र विचारों की प्रसंशा करनी चाहिये।

## भावी शोध हेतु सुझाव :–

प्रस्तुत शोध कार्य गुजरात राज्य के दाहोद जिले के फतेपुरा ब्लाक के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों कक्षा सातवीं के अनु. जन जाति के बच्चों तक मर्यादित था, किन्तु भविष्य में यह सीमांकन से बाहर दाहोद जिले, गुजरात राज्य और देश के ट्रायबल एवं नॉन ट्रायबल बच्चों को न्यादर्श के रूप में लेकर पी.एच.डी. के लिए संशोधन हो सकते हैं।

1. अनु. जाति के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।
2. अनु. जाति एवं जनजाति के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
3. ग्रामीण एवं शहरी बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
4. शहरी क्षेत्र के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।
5. शिक्षित और अशिक्षित परिवारों के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
6. माता–पिता की आर्थिक स्थिति के आधार पर बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।